Nagaland University
(*A Central University established by the act of Parliament, 35/1989*)
Department of Hindi
Kohima Campus, Meriema, Kohima-797004

MA (Hindi) NEP-2yr Syllabus- 2025

1st Semester

PAPER CODE	COURSES	TYPES OF COURSES	CREDITS	CONTACT HOURS	Internal	External	MARKS
MAHin-1	हिंदी साहित्य का इतिहास 1	CORE	4	60	40	60	100
MAHin-2	हिंदी भाषा का इतिहास और लिपि	CORE	4	60	40	60	100
MAHin-3	भारतीय साहित्य सिद्धांत 1	CORE	4	60	40	60	100
MAHin-4	आधुनिक कविता	CORE	4	60	40	60	100
MAHin-5	हिंदी नाटक	CORE	4	60	40	60	100

2nd Semester

PAPER CODE	COURSES	TYPES OF COURSES	CREDITS	CONTACT HOURS	Internal	External	MARKS
MAHin-6	हिंदी साहित्य का इतिहास -2	CORE	4	60	40	60	100
MAHin-7	भारतीय साहित्य सिद्धांत -2	CORE	4	60	40	60	100
MAHin-8	प्रयोजनमूक हिंदी	CORE	4	60	40	60	100

MAHin-9	भाषा-विज्ञान	**CORE**	**4**	**60**	**40**	**60**	**100**
MAHin-10	हिन्दी साहित्य में अस्मितामूलक विमर्श	**CORE**	**4**	**60**	**40**	**60**	**100**

3rd Semester

PAPER CODE	**COURSES**	**TYPES OF COURSES**	**CREDITS**	**CONTACT HOURS**	**Internal**	**External**	**MARKS**
MAHin-11	पाश्चात्य साहित्यालोचन एवं हिंदी आलोचना	**CORE**	**4**	**60**	**40**	**60**	**100**
MAHin-12	हिन्दी गद्य विविध विधाएं	**CORE**	**4**	**60**	**40**	**60**	**100**
MAHin-13	भक्तिकालीन काव्य		**4**	**60**	**40**	**60**	**100**
MAHin-14	आधुनिक कविता (छायावादोत्तर कविता)	**CORE**	**4**	**60**	**40**	**60**	**100**
MAHin-15	वैकल्पिक विषय (1) कबीर (2) प्रेमचंद	**CORE**	**4**	**60**	**40**	**60**	**100**

4th Semester: **Dissertation Writing & Submission: 20 CREDITS: 500marks: Dissertation Submission: 300 marks, Viva voce: 200 marks**

PAPER CODE	COURSES	TYPES OF COURSES	CREDITS	CONTACT HOURS	Internal	External	MARKS
MAHin-16	**लघु शोध प्रबंध /Dissertation Writing**	**CORE**	**20**	**300**	**200**	**300**	**500**
Unit I	**शोध सारांश और प्रस्तुति**	**CORE**	**4**	**60**	**40**	**60**	**100**
Unit II	**क्षेत्र कार्य और डेटा संग्रह**	**CORE**	**4**	**60**	**40**	**60**	**100**
Unit III	**अध्याय लेखन**	**CORE**	**4**	**60**	**40**	**60**	**100**
Unit IV	**शोध प्रबंध प्रस्तुतीकरण**	**CORE**	**4**	**60**	**40**	**60**	**100**
Unit V	**मौखिक परीक्षा**	**CORE**	**4**	**60**	**40**	**60**	**100**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य : एम. ए हिंदी के पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छात्रों को हिंदी साहित्य, भाषा, और संस्कृति के गहन ज्ञान से परिचित कराना है। यह पाठ्यक्रम छात्रों को हिंदी साहित्य के इतिहास, विभिन्न साहित्यिक विधाओं और आलोचनात्मक दृष्टिकोणों से अवगत कराता है। साथ ही, यह उनकी शोध क्षमता और साहित्यिक विश्लेषण कौशल को विकसित करने में मदद करता है।

हिंदी साहित्य के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम के मुख्य प्रतिफल (Complete Course Outcome) :

i. छात्रों को हिंदी भाषा और साहित्य के इतिहास, विकास और विभिन्न शैलियों का गहन ज्ञान प्राप्त होगा। उन्हें विभिन्न साहित्यिक आंदोलनों, लेखकों और उनकी रचनाओं की विस्तृत जानकारी मिलेगी।
ii. छात्र साहित्यिक ग्रंथों का विश्लेषण करने और उनकी आलोचना करने की क्षमता विकसित करेंगे। वे विभिन्न साहित्यिक सिद्धांतों और दृष्टिकोणों को समझने और लागू करने में सक्षम होंगे।
iii. छात्रों को स्वतंत्र अनुसंधान करने और शोध पत्र लिखने की क्षमता प्राप्त होगी। वे स्पष्ट, संक्षिप्त और प्रभावी ढंग से लिखने में सक्षम होंगे।
iv. साहित्य के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परंपरा की जानकारी प्राप्त होगी, जिससे विद्यार्थी राष्ट्र व उसके महत्व की ओर आकर्षित होंगे ।

v. हिन्दी भाषा और साहित्य के ज्ञान के उपरांत छात्र भारत में कहीं भी काम कर पाएंगे क्योंकि हिंदी हमारी राजभाषा होने के साथ-साथ अखिल भारतीय स्तर पर राष्ट्रभाषा के रूप में भी

समाहित है।

vi. हिन्दी उपन्यासों और जीवनियों के माध्यम से हमारी समृद्ध संस्कृति और विरासत को छात्र समझ सकते हैं तथा उसका मूल्यांकन कर सकते हैं। गद्य और पद्य के माध्यम से वे दैनंदिन जीवन में उपयोगी मूल्यों के महत्व को समझ सकते हैं, जिससे वे अधिक मानवीय बनेगें ।

vii. नाटकों को पढ़ने और देखने से वे अच्छे नाटककार और अच्छे अभिनेता बन सकते हैं। कबीर,जायसी, सूर, तुलसी एवं मीरा जैसे महत्वपूर्ण कवियों के अध्ययन से विद्यार्थियों के नैतिक और मानवीय मूल्य मजबूत होते हैं। सभी धर्मों और सभी जातियों के लिए सम्मान के साथ वे सद्भाव में रहना सीखते हैं।

viii. हिन्दी साहित्य के अंतर्गत विभिन्न साहित्यिक विधाओं के अध्ययन से विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में वृद्धि होती है। लेखन कौशल अवसरों के द्वार खोलता है।उन्हें कई व्यावसायिक अवसर भी प्राप्त हो सकयें हैं । जैसे - शिक्षण, पत्रकारिता, अनुवाद, लेखन, सरकारी नौकरियां आदि ।

ix. अनुवाद और जनसंचार से जुड़े पाठ्यक्रमों में रुचि रखने वाले विद्यार्थी आगे चलकर अनुवादक और मिडियाकर्मी के रूप में रोजगार पा सकते हैं।

x. नेट/स्लेट/पी. एच. डी जैसी परीक्षाओं की तैयारी कर पाएंगे। साथ ही साथ हिंदी साहित्य के माध्यम से समाज को मजबूत करने के लिए नैतिक मूल्यों का विकास कर पाएंगे ।

SYLLABUS FOR MASTERS PROGRAMME IN HINDI (NEP)

<u>सत्र – 1</u>

101. हिंदी साहित्य का इतिहास – 1, Course Code: MAHIN – 101, क्रेडिट - 4

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objective) :

- हिन्दी साहित्य के इतिहास का विश्लेषणात्मक ज्ञान प्रदान करना।
- इतिहास लेखन, प्रमुख इतिहास ग्रंथ और विभिन्न युगों का विशिष्ट ज्ञान प्रदान करना।
- हिन्दी साहित्य के आदिकालीन इतिहास का विश्लेषणात्मक ज्ञान देना।

पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल (Course Learning Outcome):

- इतिहास लेखन और साहित्यिक इतिहास की समझ विकसित होगी।
- हिन्दी के विभिन्न युगों का विश्लेषणात्मक ज्ञान प्राप्त होगा।
- हिन्दी साहित्य के प्रारम्भिक युग का विशिष्ट ज्ञान प्राप्त होगा।

इकाई 1. साहित्येतिहास की अवधारणा
साहित्येतिहास के पुनर्लेखन की समस्याएँ

इकाई 2. हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा

इकाई 3. हिंदी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन और नामकरण
(आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिक काल के सन्दर्भ में)

इकाई 4. आदिकालीन साहित्य की पृष्ठभूमि
आदिकालीन साहित्य की प्रवृत्तियां

इकाई 5. आदिकालीन साहित्य का वर्गीकरण और सामान्य परिचय
सिद्ध-साहित्य, नाथ-साहित्य, जैन साहित्य, लौकिक साहित्य और रासो-साहित्य

अनुमोदित ग्रन्थ :

हिंदी साहित्य का इतिहास ,	रामचंद्र शुक्ल,	प्रभात प्रकाशन
हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास,	गणपतिचंद्र गुप्त,	गेनरिक प्रकाशन
हिंदी साहित्य का सरल इतिहास,	विश्वनाथ त्रिपाठी,	ओरिएंट ब्लाककवान
हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास ,	बच्चन सिंह,	राधा कृष्ण प्रकाशन
हिंदी साहित्य की भूमिका,	हजारी प्रसाद द्विवेदी,	राजकमल प्रकाशन
हिदी साहित्य का इतिहास,	सं. नगेन्द्र,	साहित्य सरोवर
हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास	रामस्वरूप चतुर्वेदी	
हिंदी साहित्य के इतिहास की समस्याएँ	अवधेश प्रधान	
हिंदी साहित्य का आदिकाल	हजारी प्रसाद द्विवेदी	
हिंदी साहित्य का अतीत	विश्वनाथ प्रसाद मिश्र	
हिंदी साहित्य का इतिहास दर्शन	नलिन विलोचन शर्मा	
साहित्य और इतिहास दृष्टि	मैनेजर पाण्डेय	
आचार्य रामचंद्र शुक्ल की इतिहास दृष्टि	महेन्द्रपाल शर्मा	
हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास	रामकुमार वर्मा	

102. हिंदी भाषा का इतिहास और लिपि, COURSE CODE: MAHIN – 102, क्रेडिट- 4

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objective)

- हिन्दी भाषा के इतिहास, भाषा-परिवार, उनकी संख्या, प्रमुख भाषाओं एवं उनकी प्रवृत्तियों एवं रूपों के अन्तः संबंधों का विश्लेषणात्मक ज्ञान।
- पुरानी से नई व आधुनिक हिन्दी तक की यात्रा का विश्लेषणात्मक ज्ञान।
- देवनागरी लिपि के इतिहास, उद्भव एवं विकास, गुण एवं मानकीकरण का विश्लेषणात्मक ज्ञान।

पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल (Course Learning Outcome)

- इससे भाषा और उसके इतिहास की समझ विकसित होगी।
- हिन्दी की एक भाषा के रूप में विकास का विश्लेषणात्मक ज्ञान प्राप्त होगा।
- हिन्दी के विभिन्न रूपों व देवनागरी लिपि के विकास की प्रक्रिया का विशिष्ट ज्ञान प्राप्त होगा।

इकाई 1. हिंदी भाषा का विकास
प्रमुख भाषा परिवार और हिंदी
हिंदी का प्रारंभिक रूप
अवहट्ठ और पुरानी हिंदी

इकाई 2. हिंदी की प्रमुख विभाषाएँ और बोलियाँ
विभाषा- पूर्वी हिंदी, पश्चिमी हिंदी, बिहारी हिंदी, राजस्थानी हिंदी और पहाड़ी
प्रमुख बोलियाँ – ब्रज, अवधी, भोजपूरी

इकाई 3. हिंदी भाषा के प्रमुख रूप
रेख्ता, हिन्दवी, दक्खिनी, खड़ी बोली हिंदी, उर्दू और हिन्दुस्तानी

इकाई 4. आधुनिक युग में हिंदी
अंग्रेजों की भाषानीति, खड़ीबोली आंदोलन, राजभाषा के रूप में हिंदी

इकाई 5 . देवनागरी लिपि: उद्भव एवं विकास, गुण एवं विशेषताएं
लिपि और भाषा
देवनागरी लिपि और हिंदी भाषा का मानकीकरण

अनुमोदित ग्रन्थ:-

हिंदी भाषा का इतिहास	भोलानाथ तिवारी	वाणी प्रकाशन
हिंदी भाषा	हरदेव बाहरी	अभिव्यक्ति प्रकाशन
भारत की भाषा समस्या	रामविलास शर्मा	राजकमल प्रकाशन
पुरानी हिंदी	चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी'	
हिंदी भाषा में अपभ्रंश का योग	नामवर सिंह	
हिंदी भाषा का उद्भव और विकास	उदयनारायण तिवारी	
हिंदी भाषा विज्ञान	किशोरीदास वाजपेयी	
हिंदी भाषा का समाजशास्त्र	रविन्द्रनाथ श्रीवास्तव	
हिंदी भाषा	श्यामसुन्दर दास	
भाषा और समाज	रामविलास शर्मा	

103 - साहित्य सिद्धांत भारतीय – 1 COURSE CODE: MAHIN – 103, क्रेडिट - 4

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objective)

- भारतीय काव्यशास्त्र की संस्कृत पृष्ठभूमि का विश्लेषणात्मक ज्ञान।
- विभिन्न संप्रदायों एवं आचार्यों के बारे में जानकारी प्राप्त करना। रस-संप्रदाय के स्वरूप, निष्पत्ति एवं शक्ति व सीमा का विशिष्ट विश्लेषणात्मक ज्ञान।
- काव्य-लक्षण, काव्य-हेतु एवं काव्य-प्रयोजन के माध्यम से इनकी परिभाषाओं, संस्कृत आचार्यों के विभिन्न मतों के अवधारणाओं के चरणों का विश्लेषणात्मक ज्ञान।

पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल (Course Learning Outcome):

- भारतीय काव्य शास्त्र की संस्कृत पृष्ठभूमि की समझ विकसित होगी।
- विभिन्न संप्रदायों, आचार्यों एवं उनकी काव्य संबंधी अवधारणाओं का विश्लेषणात्मक ज्ञान प्राप्त होगा।
- रस संप्रदाय के स्वरूप, निष्पत्ति एवं शक्ति, सीमा व उसके आधुनिक विकास का विशिष्ट ज्ञान प्राप्त होगा।
- काव्य-लक्षण, काव्य-हेतु एवं काव्य-प्रयोजन के माध्यम से इनकी परिभाषाओं, संस्कृत आचार्यों के विभिन्न मतों के अवधारणाओं का विशिष्ट ज्ञान प्राप्त होगा।

इकाई 1. भारतीय काव्यशास्त्र का परिचय
काव्यशास्त्र - शब्दार्थ एवं विविध अभिधान, भारतीय
काव्यशास्त्र-ऐतिहासिक सर्वेक्षण, विभिन्न काव्य-सम्प्रदायों का संक्षिप्त-सामान्य परिचय

इकाई 2. रस-सम्प्रदाय
रस की परिभाषा, रस का स्वरुप,रस के अवयव, रस के प्रकार
रस सम्प्रदाय के प्रवर्तक और उनकी स्थापनाएं, रस सूत्र,
स्थायी भाव और रस, रस-निष्पत्ति और उसके प्रमुख व्याख्याकार
साधारणीकरण की अवधारणा

इकाई 3. काव्य-लक्षण
काव्य के लक्षण - विभिन्न मत, मम्मट के काव्य-लक्षण सम्बन्धी मत

इकाई 4 . काव्य-प्रयोजन
काव्य-प्रयोजन - विभिन्न मत, शब्द-शक्ति, अलंकार और छंद

अनुमोदित ग्रन्थ :

काव्यशास्त्र की भूमिका	डॉ. नगेन्द्र
भारतीय काव्यशास्त्र	सत्यदेव चौधरी
साहित्य चिंतन	देवेन्द्रइस्सर
साहित्य सिद्धांत	रेनेवेलेक व ऑस्टिनवारेन
रससिद्धांत का पुनर्विवेचन	डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त
भारतीय साहित्यशास्त्र	बलदेव उपाध्याय
संरचनावाद, उत्तर संरचनावाद एवं प्राच्यकाव्यशास्त्र	गोपीचंद नारंग
भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र का संक्षिप्त विवेचन	सत्यदेवचौधरी एवं शांतिस्वरूप चौधरी
काव्यशास्त्र	भगीरथ मिश्र
भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र	गणपतिचन्द्रगुप्त

104 आधुनिक कविता, COURSE CODE – MAHIN – 104, क्रेडिट - 4

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objective) :

- आधुनिक कविता की पृष्ठभूमि का विश्लेषणात्मक ज्ञान।
- भारतेन्दु, मैथिलीशरण गुप्त एवं अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' के काव्य वकाव्यगत विशेषताओं का विश्लेषणात्मक ज्ञान।
- छायावाद की पृष्ठभूमि का विश्लेषणात्मक ज्ञान।
- छायावाद के चार स्तंभों यथा जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सुमित्रानंदन पंत एवं महादेवी वर्मा की विशिष्ट कविताओं के माध्यम से उनके काव्य एवं विशेषताओं का विश्लेषणात्मक ज्ञान।

पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल (Course Learning Outcome):

- आधुनिक कविता के अर्थ, स्वरूप, उद्भव एवं विकास की समझ विकसित होगी।
- आधुनिक कविता के अंतर्गत ही छायावाद की उत्पत्ति की परिस्थितियों एवं प्रवृत्तियों का ज्ञान प्राप्त होगा।
- चयनित कविताओं के माध्यम से हम आधुनिक कविता की एक रूप-रेखा तैयार कर सकेंगे।

इकाई 1. भारतेंदु हरिश्चंद्र: सामान्य परिचय
प्रेम सरोवर
नए ज़माने की मुकरी
हिंदी उन्नति पर व्याख्यान

इकाई 2.मैथिली शरण गुप्त: सामान्य परिचय
नर हो, न निराश करो मन को
सखी वे मुझसे कह कर जाते
साकेत नवमं सर्ग (प्रथम दस पद)

इकाई 3. अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
ब्रज की संध्या, कर्मवीर, प्रिय-प्रवास प्रथम सर्ग - पाठ एवं विवेचन

इकाई 4. छायावाद-1
जयशंकर प्रसाद
बीती विभावरी जाग री, कामायनी (चिंता, श्रद्धा एवं आनंद सर्ग)
सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
जूही की कली, स्नेह निर्झर बह गया है, मैं अकेला

इकाई 5. छायावाद-2
सुमित्रानंदनपन्त
प्रथम रश्मि, शांत स्निग्धज्योत्स्नाउज्जवल, भारत माता ग्राम वासिनी
महादेवी वर्मा
पंथ होने दो अपरिचित, जो तुम आ जाते एक बार, मैं नीर भरी दुःख की बदली

अनुमोदित ग्रन्थ :-

भारतेंदु हरिश्चंद्र और हिंदी नवजागरण की समस्याएँ	रामविलास शर्मा,राजकमल प्रकाशन
कविता से साक्षात्कार	मलयज, संभावना प्रकाशन
साकेत – एक अध्ययन	डॉ. नगेन्द्र, नयी कविता
लम्बी कविताओं का रचना-विधान	सं नरेन्द्र मोहन
निराला की सहित्य साधना	रामविलास शर्मा,बुक्स प्रकाशन

प्रकाशन	
निराला की सहित्य साधना	रामविलास शर्मा,बुक्स प्रकाशन
कामायनी एक पुनर्विचार	मुक्तिबोध
सुमित्रानंदनपन्त	डॉ. नगेन्द्र
कवि सुमित्रानंदन पन्त	नंददुलारे वाजपेयी
महादेवी वर्मा	इंद्रनाथमदान
पन्त, प्रसाद और गुप्त	रामधारीसिंह'दिनकर'
महादेवी	दूधनाथ सिंह

105 - हिंदी नाटक, COURSE CODE – MAHIN 105, क्रेडिट - 4

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objective) :

- आधुनिक नाटक की पृष्ठभूमि, परंपरा का विश्लेषणात्मक ज्ञान।
- भारतेन्दु हरिश्चंद्र एवं मोहन राकेश के नाटककार व्यक्तित्व, उनकी नाट्यदृष्टियों एवं नाटकों की विशिष्टताओं एवं तात्कालिक परिस्थतियों के परिप्रेक्ष्य में उनके एवं उनके नाटकों के महत्व का विश्लेषणात्मक ज्ञान।
- 'अंधेरनगरी' और 'आधे-अधूरे' के भाषिक एवं शिल्पगतवैशिष्ट्य का विश्लेषणात्मक ज्ञान।

पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल (Course Learning Outcome):

- आधुनिक नाट्यपरंपरा के उद्भव एवं विकास की समझ विकसित होगी।
- नाटकों के बहाने हम तात्कालिक परिस्थितियों की थाह पा सकेंगे। 'अंधेर नगरी' में व्यक्त सामाजिक यथार्थ पर व्यंग्य और विडंबना तथा 'आधे-अधूरे' के माध्यम से बदलती आर्थिक और सामाजिक परिस्थतियों में एक पारिवार के नैतिक अवमूल्यन एवं उससे उपजी स्थितियों के प्रभाव के बारे में ज्ञान हो सकेगा।
- चयनित नाटकों के माध्यम से हम आधुनिक नाटक के भाषा, शिल्प, मंचन आदि के बारे में जान सकेंगे।

इकाई 1. नाटक की सैद्धांतिकी
इकाई 2. हिन्दी नाटक ऐतिहासिक परिदृश्य
इकाई 3. अंधेर नगरी- भारतेंदु हरिश्चंद्र
इकाई 4 . आधे-अधूरे- मोहन राकेश

अनुमोदित ग्रन्थ:-

अंधेर नगरी	भारतेंदु हरिश्चंद्र, लोक भारती प्रकाशन
आधे-अधूरे	मोहन राकेश, राधा कृष्ण प्रकाशन
हिंदी नाटक: उद्भव एवं विकास	दशरथ ओझा, राजपाल प्रकाशन
रंग - दर्शन	नेमिचंद्र जैन
हिंदी नाटक	बच्चन सिंह
नाटककार भारतेंदु की रंग-परिकल्पना	सतेन्द्रतनेजा
नाटक और रंगमंच	सं. गिरीश रस्तोगी

<u>सत्र 2-</u>

201. हिंदी साहित्य का इतिहास-2, COURSE CODE- MAHIN – 201, क्रेडिट - 4

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objective) :

- हिन्दी साहित्य के इतिहास का विश्लेषणात्मक ज्ञान।
- भक्ति काल की समय-सीमा, उदय एवं विकास की पृष्ठभूमि, विभिन्न विद्वानों के मतों का विश्लेषणात्मक ज्ञान।
- विभिन्न काव्य-धाराओं यथा, सगुण-निर्गुण एवं उनके अंतर्गत आने वाली उपकाव्यधाराओं का विशिष्ट ज्ञान प्रदान करना।
- विभिन्न काव्यधाराओं के प्रमुख कवियों एवं उनके काव्यगत एवं शिल्पगत विशेषताओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल (Course Learning Outcome):

- हिन्दी साहित्य के दूसरे काल- भक्ति काल की समझ विकसित होगी।
- भक्तिकाल के अंतर्गत आने वाले विभिन्न काव्यधाराओं का ज्ञान प्राप्त होगा।
- प्रमुख कवियों के काव्यगत एवं शिल्पगत विशेषताओं का विशिष्ट ज्ञान प्राप्त होगा।

इकाई 1. भक्तिकाल की पृष्ठभूमि
भक्तिकाल की पृष्ठभूमि (राजनितिक, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक)
भक्ति आंदोलन के उदय के कारण
भक्ति आंदोलन का अखिल भारतीय स्वरूप

इकाई 2. निर्गुण काव्यधारा
संतकाव्य का वैचारिक आधार और प्रमुख कवि
संतकाव्य की प्रवृत्तियां
सूफी काव्य परम्परा का वैचारिक आधार और प्रमुख कवि
सूफी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियां

इकाई 3. सगुण काव्यधारा
रामभक्ति काव्य का वैचारिक आधार और प्रमुख कवि
रामकाव्य की विशेषताएं
कृष्णकाव्य का वैचारिक आधार और प्रमुख कवि
कृष्णकाव्य की विशेषताएं

इकाई 4. रीतिकाल
रीतिकालीन काव्य की पृष्ठभूमि (राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक)
नामकरण की समस्या, रीतिकालीन साहित्य की विभिन्न धाराएं

इकाई 5. रीतिकाल, रीतिकालीन साहित्य की प्रवृत्तियां, रीतिकाल की देन

अनुमोदित ग्रन्थ :-

हिंदी साहित्य का इतिहास	रामचंद्र शुक्ल,
हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास	रामस्वरूपचतुर्वेदी
हिंदी साहित्य के इतिहास की समस्याएँ	अवधेश प्रधान
हिंदी साहित्य की भूमिका	हजारी प्रसाद द्विवेदी
हिंदी साहित्य का आदिकाल	हजारी प्रसाद द्विवेदी
हिंदी साहित्य का अतीत	विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
हिदी साहित्य का इतिहास	सं. नगेन्द्र
हिंदी साहित्य का इतिहास दर्शन	नलिन विलोचन शर्मा
साहित्य और इतिहास दृष्टि	मेनेजरपाण्डेय
आचार्य रामचंद्र शुक्ल की इतिहास दृष्टि	महेंद्रपाल शर्मा
हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास	रामकुमार वर्मा
हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास	गणपतिचंद्र गुप्त
हिंदी साहित्य का सरल इतिहास	विश्वनाथ त्रिपाठी
हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास	बच्चन सिंह
भक्ति जीवन-काव्य और लोक	शिवकुमार मिश्र

202. भारतीय साहित्य सिद्धांत-2, COURSE CODE- MAHIN- 202, क्रेडिट - 4

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objective) :

- भारतीय काव्यशास्त्र की संस्कृत पृष्ठभूमि का विश्लेषणात्मक ज्ञान।
- विभिन्न संप्रदायों एवं आचार्यों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- अलंकार, रीति, ध्वनि एवं औचित्य संप्रदाय के स्वरूप एवं शक्ति एवं सीमा का विशिष्ट विश्लेषणात्मक ज्ञान।
- भारतीय काव्य-सिद्धांतों के महत्व का विशिष्ट विश्लेषणात्मक ज्ञान।

पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल (Course Learning Outcome):

- भारतीय काव्य शास्त्र की संस्कृत पृष्ठभूमि की समझ विकसित होगी।
- विभिन्न संप्रदायों, आचार्यों एवं उनकी काव्य संबंधी अवधारणाओं का विश्लेषणात्मक ज्ञान प्राप्त होगा।
- अलंकार, रीति, ध्वनि एवं औचित्य संप्रदाय के स्वरूप एवं शक्ति एवं सीमा का विशिष्ट ज्ञान प्राप्त होगा।
- इन भारतीय काव्य-सिद्धांतों का विशिष्ट ज्ञान प्राप्त होगा।

इकाई 1. अलंकार-सम्प्रदाय
अलंकार सम्प्रदाय : प्रवर्तक और उनकी स्थापनाएं
अलंकार का सामान्य परिचय
अलंकार सिद्धांत का औचित्य

इकाई 2. रीति-सम्प्रदाय
रीति सिद्धांत का अर्थ और उनकी स्थापनाएं
आचार्य वामन का गुण-विवेचन, गुण-रीति सम्बन्धी विवेचन

इकाई 3. ध्वनि-सम्प्रदाय
ध्वनि से अभिप्राय और उनकी स्थापनाएं
काव्य के भेद ध्वनि के आधार पर

इकाई 4. वक्रोक्ति-सम्प्रदाय
वक्रोक्ति-सम्प्रदाय के प्रवर्तक और मूल-स्थापना
वक्रोक्ति-सिद्धांत एवं अन्य काव्य-तत्व

इकाई 5. औचित्य- सम्प्रदाय
औचित्य सिद्धांत के प्रवर्तक, स्थापना और महत्त्व

अनुमोदित ग्रन्थ :-

काव्यशास्त्र की भूमिका	डॉ. नगेन्द्र
भारतीय काव्यशास्त्र	सत्यदेव चौधरी
साहित्य चिंतन	देवेन्द्रइ स्सर
साहित्य सिद्धांत	रेनेवेलेक व ऑस्टिनवारेन
रस सिद्धांत का पुनर्विवेचन	डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त
भारतीय साहित्यशास्त्र	बलदेव उपाध्याय
संरचनावाद, उत्तर संरचनावाद एवं प्राच्य-कव्यशास्त्र	गोपीचंद नारंग
भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र का संक्षिप्त विवेचन	सत्यदेव चौधरी एवं शांतिस्वरूप चौधरी
काव्यशास्त्र	भगीरथ मिश्र
भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र	गणपतिचन्द्र गुप्त

203: प्रयोजन मूलक हिंदी, COURSE CODE – MAHIN – 203, क्रेडिट - 4

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objective) :

- प्रयोजनमूलक हिन्दी की संकल्पना, विविध रूपों एवं प्रयुक्ति क्षेत्रों का विश्लेषणात्मक ज्ञान।
- हिन्दी भाषा की विभिन्न प्रयुक्तियों, स्वरूप तथा व्यवहार क्षेत्र का ज्ञान।
- कार्यालीन हिन्दी के स्वरूप, प्रयोग क्षेत्र, प्रशासनिक प्रारूप, एवं भाषा-स्वरूप के नियमों का विशिष्ट विश्लेषणात्मक ज्ञान।
- जनसंचार का अर्थ, विभिन्न माध्यम एवं रूप , माध्यमों के भेद, भाषिक-प्रकृति का विशिष्ट विश्लेषणात्मक ज्ञान।

पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल (Course Learning Outcome):

- प्रयोजनमूलक हिन्दी की प्रकृति एवं महत्व की समझ विकसित होगी।
- प्रयोजनमूलक हिन्दी के सैद्धांतिक एवं विश्लेषणात्मक ज्ञान का विकास होगा।
- राजभाषा आधिकारी के अभ्यर्थी, कार्यालयी हिन्दी के ज्ञान द्वारा अवसर प्राप्त कर सकेंगे।
- मीडिया एवं जनसंचार में रुचि रखने वाले विद्यार्थियों के अभिप्रेरणा में उपयोगी होगा एवं रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे।

इकाई 1. प्रयोजनमूलक हिंदी : अभिप्राय और परिव्याप्ति एवं प्रयोगात्मक क्षेत्र

इकाई 2. प्रयोजनमूलकप्रयुक्तियां एवं व्यवहार क्षेत्र
कार्यालयी, वाणिज्यिक, विधि, बैंकिंग, वैज्ञानिक और तकनीकी, सामाजिक विज्ञान, संचार माध्यम, विज्ञापन, पत्रकारिता

इकाई 3. कार्यालयी हिंदी के अनुप्रयुक्ति क्षेत्र, पत्र-लेखन एवं उसके प्रकार

प्रारूप लेखन, टिप्पण, प्रतिवेदन और परिपत्र

इकाई 4. पारिभाषिक शब्दावली : निर्माण के सिद्धांत एवं प्रक्रिया
तात्पर्य, लक्षण एवं विशेषताएं, निर्माण के सिद्धांत, भिन्न प्रयुक्ति क्षेत्र

इकाई 5. जनसंचार माध्यम
जनसंचार : अभिप्राय और महत्त्व
जनसंचार लेखन के विविध रूप
जनसंचार लेखन की भाषा

अनुमोदित ग्रन्थ - :

प्रयोजन मूलक हिंदी	दंगल झाल्टे, वाणी प्रकाशन
हिंदी भाषा	हरदेव बाहरी
पुरानी हिंदी	चंद्रधर शर्मा गुलेरी
भारत की भाषा समस्या	रामविलास शर्मा
हिंदी भाषा में अपभ्रंश का योग	नामवर सिंह
हिंदी भाषा का उद्भव और विकास	उदयनारायण तिवारी

204: भाषा-विज्ञान, COURSE CODE – MAHIN – 204, क्रेडिट - 4

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objective) :

- भाषा-विज्ञान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, परिभाषा, विविध रूपों का विश्लेषणात्मक ज्ञान।
- संरचनात्मक भाषा-विज्ञान एवं प्रमुख शाखाओं का विशिष्ट ज्ञान।
- भाषा, भाषिक-वर्गीकरण का विशिष्ट विश्लेषणात्मक ज्ञान।
- ध्वनि-विज्ञान के अंतर्गत स्वर-व्यंजन ध्वनि भेद, स्वन, स्वनिम एवं संस्वन की संकल्पना का विशिष्ट विश्लेषणात्मक ज्ञान।
- रूप-विज्ञान के अंतर्गत रूप की परिभाषा, रूपिम की संकल्पना, शब्द और अर्थ, शब्द की रचना-प्रक्रिया, पदबंध के स्तर, वर्गीकरण और प्रकार्य का विशिष्ट ज्ञान।
- अर्थ-विज्ञान के अंतर्गत अर्थ का तात्पर्य, प्रकृति, संरचना, शब्द और अर्थ का संबंध, अनेकार्थता, पर्याय आदि का विश्लेषणात्मक ज्ञान।

पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल (Course Learning Outcome):

- भाषा-विज्ञान एवं उसके उपांगों का ज्ञान होगा। हिन्दी की प्रकृति एवं महत्व की समझ विकसित होगी।
- अनुप्रयुक्त भाषा-विज्ञान में रुचि रखने वाले विद्यार्थी इस क्षेत्र में रोजगार के अवसर तलाश सकेंगे।

इकाई 1. भाषा
भाषा की परिभाषा और विशेषताएं
भाषिक संरचना के विविध स्तर- अर्थ, प्रोक्ति, वाक्य, रूप और शब्द
भाषा के विविध रूप : मूल भाषा, बोली, मानक भाषा, सम्पर्क भाषा और राजभाषा

इकाई 2. भाषा-विज्ञान
भाषा-विज्ञान : परिभाषा एवं स्वरूप
भाषा-विज्ञान की प्रमुख शाखाएं : सामान्य परिचय

इकाई 3. भाषाओं का वर्गीकरण
भाषाओं का वर्गीकरण और आधार

आधुनिक भारतीय भाषाओं का सामान्य परिचय

इकाई 4. ध्वनि विज्ञान
तात्पर्य एवं ध्वनि अध्ययन के आधार - ध्वनि विज्ञान से
स्वनिम विज्ञान
ध्वनि परिवर्तन के कारण

इकाई 5. रूप विज्ञानं और अर्थ विज्ञान
रूप विज्ञान से तात्पर्य एवं संकल्पना
रूप परिवर्तन के कारण
अर्थ विज्ञान से तात्पर्य

अनुमोदित ग्रन्थ :-

भाषा विज्ञान की भूमिका	देवेन्द्रनाथ शर्मा, राधा कृष्ण प्रकाशन
भाषा-विज्ञान और भाषा-शास्त्र	कपिलदेवद्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन
भाषा शास्त्र और हिंदी भाषा की रूपरेखा	देवेन्द्र कुमार शास्त्री, विश्वविद्यालय प्रकाशन
भाषा और भाषा-विज्ञान	हनुमान प्रसाद शुक्ल
सामान्य भाषा विज्ञान	बाबुराम सक्सेना
भाषा विज्ञान : हिंदी भाषा और लिपि	राम किशोर शर्मा, लोक भारती प्रकाशन
भाषा-विज्ञान	भोलानाथ तिवारी, किताब महल प्रकाशन
हिंदी भाषा की संरचना	मुकेशअग्रवाल, वाणी प्रकाशन
भाषाशास्त्र की भूमिका	उदयनारायण तिवारी
भाषा-विज्ञान	रघुवंशमणि पाठक

205 – हिंदी साहित्य में अस्मितामूलक विमर्श, COURSE CODE – MAHIN – 205, क्रेडिट – 4

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objective) :

- अस्मितमूलक विमर्श का अर्थ एवं स्वरूप, सैद्धांतिकी, उद्भव एवं विकास, भारतीय तथा पाश्चात्य संदर्भों का विश्लेषणात्मक ज्ञान।
- विविध विमर्शों-दलित, स्त्री एवं आदिवासी विमर्शों की अवधारणात्मक संकल्पना, पृष्ठभूमि, विविधता का विशिष्ट ज्ञान।
- विविध साहित्यिक विधाओं में व्यक्त विमर्श-लेखन की चुनिंदा और प्रमुख रचनाओं का विशिष्ट विश्लेषणात्मक ज्ञान।

पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल (Course Learning Outcome):

- इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी साहित्य के क्षेत्र में नवीन अध्ययन क्षेत्रों से परिचित हो सकेंगे।
- विभिन्न अस्मिताओं का ज्ञान प्राप्त होगा।
- अस्मिता की निर्मिति, विभेदन, इतिहास और अवधारणाओं की समझ विकसित कर सकेंगे।
- विविध विमर्शों के ज़रिए सामाजिक-विविधता समझ सकेंगे एवं विमर्शमूलक अध्ययन के महत्व का मूल्यांकन कर सकेंगे।

इकाई 1. विमर्शों की सैद्धांतिकी
(क) दलित विमर्श – अवधारणा और फूले-अम्बेडकर

(ख) स्त्री विमर्श – अवधारणाएं और मुक्ति आंदोलन (विदेशी और देशी), रेडिकल, मार्क्सवादी, उदारवादी, यौनिकता, लिंगभेद, पितृसत्ता व समलैंगिकता

(ग) आदिवासी विमर्श – अवधारणा और आंदोलन, जल, जंगल, जमीन व पहचान का सवाल

इकाई 2. हिंदी कविता

(क) सात भाइयों के बीच चम्पा (स्त्री विमर्श) – कात्यायनी

(ख)सोनवा का पिंजरा (दलित विमर्श) – माता प्रसाद

(ग) पत्थलगड़ी की औरतें (आदिवासी विमर्श) – वंदना टेटे

इकाई 3. हिन्दी कहानी –

(क)सलाम (दलित विमर्श) – ओमप्रकाश वाल्मीकि

(ख)नौमाई (आदिवासी विमर्श) – जमुना बीनी

(ग) छावनी में बेघर (स्त्री विमर्श) – अल्पना मिश्र

इकाई 4. हिन्दी उपन्यास –

छैला संदु – मंगल सिंह मुंडा

इकाई 5. हिन्दी आत्मकथा –

मूर्दहिया – तुलसीराम

अनुमोदित ग्रंथ –

1. अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य – मंदाकिनी मीणा व अनिरुद्ध कुमार 'सुधांशु', श्री नटराज प्रकाशन
2. दलित साहित्य की अवधारणा – वीर भारत तलवार, राधा कृष्ण प्रकाशन
3. चिंतन की परम्परा और दलित साहित्य – श्योराज सिंह बेचैन
4. भारतीय दलित साहित्य आंदोलन – एक संक्षिप्त इतिहास – मोहनदासनैमिशराय
5. ताकि बचा रहे लोकतंत्र – रवीन्द्र प्रभात
6. दलित साहित्य के प्रतिमान – एन सिंह- वाणी प्रकाशन
7. अपने घर की तलाश में – निर्मलापुतुल
8. कलम को दर्द कहने दो – कर्मशील भारती
9. आज का दलित साहित्य – तेज सिंह
10. दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र – शरण कुमार लिम्बाले
11. दलिस साहित्य का सौंदर्यशास्त्र – ओमप्रकाश वाल्मीकि- राधा कृष्ण प्रकाशन
12. दलित विमर्श की भूमिका – कंवल भारती
13. आदिवासी साहित्य विमर्श – गंगा सहाय मीणा- अनामिका प्रकाशन
14. नई सदी की पहचान – श्रेष्ठ महिला कथाकार – ममता कालिया- लोक भारती प्रकाशन
15. आदिवासी दर्शन और साहित्य – वंदना टेटे- स्पेस प्रकाशन
16. दलित साहित्य – वेदना और विद्रोह – शरण कुमार लिम्बाले- वाणी प्रकाशन
17. अयाचित अतिथि और अन्य कहानियां – जमुना बीनी- समय प्रकाशन
18. झारखंड के आदिवासियों के बीच – एक एक्टिविस्ट के नोट – वीर भारत तलवार- भारतीय ज्ञान पीठ प्रकाशन
19. झारखंड आंदोलन के दस्तावेज – वीर भारत तलवार- प्रभात प्रकाशन
20. झारखंड में मेरे समकालीन – वीर भारत तलवार

<u>सत्र – 3</u>

301. पाश्चात्य साहित्यालोचन और हिंदी आलोचना, COURSE CODE – MAHIN – 301
क्रेडिट - 4
पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objective) :

- पाश्चात्य एवं हिन्दी आलोचनात्मक चिंतन का सैद्धांतिक एवं ऐतिहासिक अवलोकन ।
- पाश्चात्य साहित्यालोचन की परंपरा एवं प्रमुख विद्वानों के सिद्धांत का विशिष्ट ज्ञान प्रदान करना।
- हिन्दी साहित्यालोचन के सैद्धांतिक पक्ष एवं परंपरा का अवलोकन। प्रमुख प्रवृत्तियों एवं प्रमुख हिन्दी साहित्यालोचकों का विश्लेषणात्मक ज्ञान।

पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल (Course Learning Outcome):

- पाश्चात्य एवं हिन्दी आलोचना के सैद्धांतिक पक्ष की समझ विकसित कर सकेंगे।
- पाश्चात्य एवं हिन्दी आलोचना के प्रमुख आलोचकों एवं सिद्धांतकारों की स्थापनाओं से परिचित हो सकेंगे।
- आलोचना के पारिभाषिक शब्दावली से परिचित हो सकेंगे जिससे आलोचनात्मक लेखन की ओर विद्यार्थी प्रवृत हो सकेंगे।

इकाई 1. पाश्चात्य साहित्यालोचन के विकास का सामान्य परिचय
प्लेटो : काव्य-दृष्टि

इकाई 2. अरस्तु : अनुकरण सिद्धांत, विरेचन सिद्धांत
लौन्जाइनस : उदात्त की अवधारणा

इकाई 3. टी.एस. इलियट : निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत, परम्परा और वैयक्तिक प्रज्ञा का सिद्धांत
आई.ए.रिचर्डस : सम्प्रेष्ण सिद्धांत

इकाई 4. हिंदी आलोचना की प्रमुख प्रवृत्तियां- अस्तित्ववाद, मनोविश्लेषणवाद, मार्क्सवाद

इकाई 5. रामचंद्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी, नन्द दुलारे वाजपेयी, राम विलास शर्मा

अनुमोदित ग्रन्थ :-

नयी समीक्षा के प्रतिमान	निर्मला जैन, किताब घर प्रकाशन
साहित्य चिंतन	देवेंद्र इस्सर
पाश्चात्य साहित्य चिंतन	निर्मला जैन, कुसुम बांठिया, राधा कृष्ण प्रकाशन
मार्क्सवाद क्या है	यशपाल

आज के जमाने में मार्क्सवाद का महत्व	एजाजअहमद
संरचना, उत्तर संरचनावाद और प्राच्य-काव्यशास्त्र	गोपीचंद नारंग, साहित्य अकादमी प्रकाशन
मार्क्सवादी साहित्य चिंतन	डॉ. शिवकुमार मिश्र, वाणी प्रकाशन
आधुनिक परिवेश और अस्तित्ववाद	शिवप्रसाद सिंह, नैसनल पब्लिशिंग हाउस
अस्तित्ववाद और मानववाद	ज्यां पाल सार्त्र, प्रकाशन संस्थान
आधुनिकतावाद और साहित्य	दुर्गा प्रसाद गुप्त
आधुनिकतावाद	दुर्गा प्रसाद गुप्त
उत्तर-संरचनावाद और उत्तर-आधुनिकता	सुधीश पचौरी
साहित्य सिद्धांत	रेनवेलेक, ऑस्टिनवारेन, लोक भारती प्रकाशन
उत्तर-आधुनिकता : विभ्रम और यथार्थ	रवि श्रीवास्तव
आधुनिकतावाद और यथार्थवाद	दुर्गा प्रसाद गुप्त, नई किताब प्रकाशन

302. हिंदी गद्य – विविध विधाएँ, COURSE CODE – MAHIN – 302, क्रेडिट - 4

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objective) :

- हिन्दी गद्य की विविध विधाओं एवं इतिहास का विश्लेषणात्मक ज्ञान।
- हिन्दी गद्य की विविध विधाओं के रचनाकारों उनकी कृतियों का विशिष्ट ज्ञान।
- हिन्दी गद्य कि विविध विधाओं के भाषिक एवं शिल्पगतवैशिष्ट्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल (Course Learning Outcome):

- हिन्दी साहित्य अंतर्गत विविध गद्य विधाओं की प्रमुख रचनाकारों एवं प्रवृत्तियों का ज्ञान प्राप्त होगा।
- विविध विधाओं की जानकारी हासिल कर विद्यार्थीगण अपने सृजनात्मक लेखन कौशल का विकास कर पाएंगे।

इकाई 1. रिपोर्ताज और व्यंग्य का सामान्य परिचय और इतिहास

इकाई 2. रेखाचित्र और संस्मरण का सामान्य परिचय और इतिहास

इकाई 3. पत्र-साहित्य और आत्मकथा का सामान्य परिचय और इतिहास

इकाई 4. जीवनी और यात्रा-वृतांत का सामान्य परिचय और इतिहास

इकाई 5. डायरी और निबंध का सामान्य परिचय और इतिहास

अनुमोदित ग्रन्थ :-

आधुनिक हिंदी साहित्य	लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय
हिंदी का गद्य साहित्य	रामचंद्र तिवारी, psj पब्लिकैशन
आधुनिक साहित्य	नन्द दुलारे वाजपेयी, राजकमल प्रकाशन
हिंदी गद्य का उद्भव और विकास	विजयेन्द्र स्नातक
साहित्य में गद्य की नयी विविध विधाएँ	कैलाशचंदभाटिया, तकशीला प्रकाशन
आधुनिक साहित्य का इतिहास	बच्चन सिंह, लोक भारती प्रकाशन
काव्य के रूप	गुलाब राय, आत्मा राम एण्ड सोन प्रकाशन
आधुनिक गद्य की विधाएँ	उदयभानु सिंह, वाणी प्रकाशन
साहित्यिक विधाएँ : पुनर्विचार	हरिमोहन, वाणी प्रकाशन

303: भक्तिकालीन काव्य, COURSE CODE – MAHIN – 304, क्रेडिट - 4

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objective) :

- हिन्दी साहित्य के मध्यकालीन इतिहास एवं काव्य का विश्लेषणात्मक ज्ञान।
- प्रमुख मध्यकालीन कवियों- कबीर, जायसी, सूर, तुलसी और मीरा के काव्यात्मक अवदान एवं महत्व का अध्ययन।
- कबीर, जायसी, सूर, तुलसी और मीरा के काव्य साहित्य का अध्ययन।

पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल (Course Learning Outcome):

- हिन्दी साहित्य के मध्यकालीन काव्य का विशिष्ट ज्ञान प्राप्त होगा।
- इन कवियों के हवाले से भक्ति की विभिन्न धाराओं की काव्यगत विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त होगा।
- प्रमुख कवियों के काव्य के भाषा एवं शिल्पगत विशेषताओं का विशिष्ट ज्ञान प्राप्त होगा।

इकाई 1. कबीरदास

पद –

हमारे गुरु दीन्ही अजब जरी
दुलहिनी गावहु मंगलाचार
संतो ई मुर्दन के गाँव
हम न मरिहैंमरिहैंसंसारा

साखियाँ :

सतगुरु मेरा सुरिवाँ
जाके मुंह माथा नहीं
पानी ही ते हिम भया

इकाई 2. जायसी

मानसरोवर खंड (जायसी ग्रंथावली, सं. रामचंद्र शुक्ल)

इकाई 3. सूरदास

अविगत गति कछुकहत न आवै
बुझत श्याम कौन तू गोरी
आये जोग सिखावनपाण्डेय
अंखिया हरि दर्शन की भूखीं

इकाई 4. तुलसीदास :

अयोध्याकांड (रामचरितमानस)

चलतप्यादें खात फल....से लेकर सैल सभा निरखि (छन्द 222 से 236 तक)

इकाई 5. मीराबाई
बसो मेरे नैनन में नंदलाल
नहीं सुख भावे थारो देसलडोरंगरुडो
पग बाँध घुंघयांणच्यांरी

अनुमोदित ग्रन्थ :

मध्यकालीन बोध का स्वरुप	हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन
सूरदास	रामचंद्र शुक्ल, नई किताब प्रकाशन
भक्ति आन्दोलन और सूरदास का काव्य	मेनेजर पाण्डेय , वाणी प्रकाशन
तुलसी	रामचंद्र शुक्ल, प्रकाशन संस्थान
तुलसी	उदयभानु सिंह, राधा कृष्ण प्रकाशन
कबीर	हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन
जायसी	विजयदेव नारायण शाही
जायसी	सं. सदानंद साही
पद्मावत का मूल्यांकन	डॉ. जगदीश श्रीवास्तव
सूफी मत : साधना और साहित्य	रामपूजन तिवारी
हिंदी काव्य की निर्गुण धारा में भक्ति	श्यामसुंदर शुक्ल, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय प्रकाशन
अकथ कहानी प्रेम की	पुरुषोत्तम अग्रवाल, राजकमल प्रकाशन
मीरा का काव्य	विश्वनाथ त्रिपाठी , वाणी प्रकाशन

304.आधुनिक कविता (छायावादोत्तर कविता), COURSE CODE – MAHIN – 304 , क्रेडिट - 4

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objective) :

- आधुनिक कविता का विश्लेषणात्मक ज्ञान।
- आधुनिक कविता के विभिन्न धाराओं एवं उनकी विशेषताओं बारे में ज्ञान प्रदान करना।
- आधुनिक कविता के प्रमुख कवि एवं उनकी रचनाओं विश्लेषणात्मक ज्ञान।

पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल (Course Learning Outcome):

- आधुनिक कविता के सैद्धांतिक एवं ऐतिहासिक समझ को विकसित कर सकेंगे।
- आधुनिक कविता के विभिन्न धाराओं, प्रमुख कवियों एवं उनकी रचनाओं के बारे मे जान सकेंगे तथा उनके महत्व को रेखांकित कर सकेंगे।

इकाई 1. परिचय
रामधारी सिंह 'दिनकर' : तृतीयसर्ग, रश्मिरथी

इकाई 2. नागार्जुन : अकाल और उसके बाद, हरिजन गाथा, सिंदुरतिलकित भाल
केदारनाथ अग्रवाल : ये धरती है उस किसान की, कल कमीज में बटन नहीं थे
मजदूर का जन्म

इकाई 3. अज्ञेय : यह दीप अकेला, बावरा अहेरी और नदी के द्वीप
शमशेर : लौट आ ओ धार, घिर गया है समय का रथ, एक पीली शाम और टूटी हुई बिखरी हुई

इकाई 4. मुक्तिबोध : भूल-गलती, मुझे कदम-कदम पर और ब्रम्हराक्षस
रघुवीर सहाय : रामदास, मुझे कुछ और करना था, अधिनायक, नेता क्षमा करें

इकाई 5. धूमिल : मोचीराम, रोटी और संसद औपटकथा
दुष्यंत : साये में धूप से कुछ चुनिन्दा ग़ज़लें

अनुमोदित ग्रन्थ-:

छायावादोत्तर हिंदी कविता की प्रवृत्तियां	त्रिलोचन पांडेय
कविता के नए प्रतिमान	नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन
आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियां	नामवर सिंह,, लोक भारती प्रकाशन
तारसप्तक की भूमिका	अज्ञेय
नयी कविता और अस्तित्ववाद	रामविलास शर्मा
विपक्ष का कवि धूमिल	राहुल
मुक्तिबोध की कविताई	अशोक चक्रधर, राधा कृष्ण प्रकाशन
अज्ञेय : कवि और काव्य	राजेंद्र प्रसाद, वाणी प्रकाशन
त्रिलोचन के बारे में	सं. गोबिंद प्रसाद, स्वराज प्रकाशन
केदारनाथ सिंह : बिम्ब से आख्यान तक	गोबिंद प्रसाद, स्वराज प्रकाशन
समकालीन कविता	विश्वनाथ प्रसाद त्रिपाठी
हिंदी साहित्य : बीसवीं शताब्दी	नंददुलारे वाजपेयी
आधुनिक हिंदी साहित्य	नंददुलारे वाजपेयी, राजकमल प्रकाशन

305. वैकल्पिक विषय, COURSE CODE – MAHIN – 305 , क्रेडिट - 4

पाठ्यक्रम उद्देश्य (Course Objective) :

- कालखंड से इतर, हिन्दी साहित्य के प्रमुख व्यक्तित्वों-कवियों एवं उपन्यासकार के साहित्य का गहन एवं विस्तृत विश्लेषणात्मक ज्ञान।
- कबीर के विभिन्न रूपों जैसे युग प्रवर्तक साहित्यकार, संत, आलोचक, विद्वान, समाज-वैज्ञानिक एवं धार्मिक विचारक आदि का ज्ञान प्रदान करना ।
- प्रेमचंद के व्यक्तित्व और कृतित्व के विस्तृत फलक को प्रस्तुत करना तथा उनके महत्व का विश्लेषणात्मक ज्ञान।

305 . (1) कबीर

इकाई 1. निर्गुण भक्ति काव्य की पूर्वपीठिका
कबीर का व्यक्तित्व और कृतित्व
संत काव्य परम्परा में कबीर का वैशिष्ट्य
कबीर के निर्गुण ब्रह्म का स्वरुप

इकाई 2. कबीर के काव्य का भाव पक्ष :
कबीर की भक्तिभावना
कबीर की रहस्य साधना
कबीर की दार्शनिक चेतना
कबीर के राम और तुलसी के राम

इकाई 3. कबीर की भाषा – कबीर का अभिव्यंजना पक्ष, अप्रस्तुत विधान एवं काव्य-रूप

इकाई 4. साखी : संख्या 1 से 50 तक

निर्धारित पाठ्यपुस्तक : 'कबीर ग्रंथावली'सम्पादक श्यामसुंदर दास

इकाई 5. दुलहिनीगावहु मंगलाचार
एक अचम्भा देखा रे भाई
हम न मरे मरिहैसंसारा
हरि जननी मैं बालक तोरा
काहे री नलंनीं तू कमलिनी
संतो धोखा कासु कहिये
मन रे तन कागद का पुतरा
लोका मति के भोरा रे
इब न रहूँ माटी के घर में
मेरा तेरा मनुआं कैसे एक होई रे

अनुमोदित ग्रन्थ :-

कबीर ग्रंथावली	सं. श्यामसुंदर दास , लोक भारती प्रकाशन
कबीर	हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन
संत कबीर	रामकुमार वर्मा, साहित्य भवन लिममिटेड
कबीर की खोज	सं. राजकिशोर, वाणी प्रकाशन
कबीर : बाज भी, कपोत भी, पपीहा भी	डॉ. धर्मवीर , वाणी प्रकाशन
कबीर के सबद	डॉ. शुकदेव सिंह, राजकमल प्रकाशन
भये कबीर कबीर वाराणसी	डॉ. शुकदेव सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन ,
अकथ कहानी प्रेम की	पुरुषोत्तम अग्रवाल, राजकमल प्रकाशन
कबीर	सं विजेंद्र स्नातक, राधा कृष्ण प्रकाशन

305. (2) प्रेमचंद **क्रेडिट- 4**

इकाई 1. उपन्यास :
1. सेवासदन 2. कर्मभूमि

इकाई 2. निर्धारित उपन्यास :
1. निर्मला 2.रंगभूमि

इकाई 3. निर्धारित कहानियाँ
ईदगाह, मंत्र, नशा, बड़े भाई साहब, पूस की रात, शतरंज के खिलाड़ी, सद्गति
प्रस्तावित कहानी संग्रह : 'शतरंज के खिलाड़ी', सं. नन्दकिशोर आचार्य,
वाग्देवी प्रकाशन,बीकानेर

इकाई 4. निर्धारित कहानियाँ
सवा सेर गेंहू, बड़े घर की बेटी, पंच परमेश्वर,बूढी काकी, नमक का दारोगा, परीक्षा,कफ़न

इकाई 5. नाटक और अन्य विचार :
नाटक – कर्बला
निबंध - साहित्य का उद्देश्य
उपन्यास - महाजनी सभ्यता
राष्ट्रभाषा हिंदी और उसकी समस्याएँ

अनुमोदित ग्रन्थ :-

सेवा सदन	प्रेमचंद, प्रभात प्रकाशन
कर्मभूमि	प्रेमचंद, प्रभात प्रकाशन
प्रेमचंद : घर में	शिवरानी देवी, नई कविता प्रकाशन
प्रेमचंद – एक विवेचन	इंद्रनाथमदान, राधा कृष्ण प्रकाशन

प्रेमचंद और उनका युग	रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन
प्रेमचंद : कलम का सिपाही	अमृत राय, लोक भारती प्रकाशन
प्रेमचंद : साहित्यिक विवेचन	नन्द दुलारे वाजपेयी, राजकमल प्रकाशन
प्रेमचंद : एक अध्ययन	राजेश्वर गुरु, प्रकाशन व्यवस्थापक मध्य – प्रदेशीय प्रकाशक समिति
प्रेमचंद: जीवन, कला और कृतित्व	हंसराज रहबर, farsight प्रकाशन

<u>सत्र - 4</u>

401 . लघु शोध प्रबंध ,COURSE CODE- MAHIN – 401 , क्रेडिट – 20

इकाई 1. शोध सारांश और प्रस्तुति

इकाई 2. क्षेत्र कार्य और डेटा संग्रह

इकाई 3. अध्याय लेखन

इकाई 4. शोध प्रबंध प्रस्तुतीकरण

इकाई 5. मौखिक परीक्षा